उपसंहार

भरतनाट्यम् नृत्य शैली लगभग 200 वर्ष पुरानी है, जिसका उद्भव नाट्यशास्त्र के आधार पर ही हुआ, जिसको नाट्य में प्रयोग किए जाने वाले भरतप्रयोग के अपना अलग स्वरूप बनाने का अवसर प्राप्त हुआ, जो कि नृत्य के स्वरूप में प्रचलन में आया, जिसे देवदासियों ने सदियों तक संगठित किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अलग–अलग राज्यों में, मन्दिरों के आश्रय में यह भरतनाट्यम् जो सादिरअट्टम् के नाम से जाना जाता था, वह पलता रहा। जिस पर आधारित अलग–अलग बानी–घराना बनी। नाट्यशास्त्र के विविध तत्वों के अनुसार अलग प्रान्त, देश, घराने के नृत्यकार प्रभावित हुए। उन तत्वों को देवदासियों ने अपने नृत्य का आधार बनाया। इसी प्रकार अलग–अलग बानियाँ बनी, लेकिन नाट्यशास्त्र के कुछ तत्व किसी एक बानी में अधिक तो किसी में कम दिखाई पड़ती है। परन्तु जिसकी आधारबोध शिला हमेशा नाट्यशास्त्र की रही है। अनेक वर्ष के अन्तराल में नाट्यशास्त्र के बाद लिखे गए शास्त्रों का प्रभाव भी भरतनाट्यम् पर पड़ा और धीरे–धीरे नाट्यशास्त्र की अपेक्षा अन्य शास्त्र जैसे अभिनय दर्पण का प्रचलन बढ़ गया। अतः नाट्यशास्त्र में वर्णित तत्वों का महत्व धीरे–धीरे नृत्य जगत् में कम हुआ। कई नृत्य के विद्वान्, गुरु, शोधकर्ता इत्यादि कलाप्रिय समुदाय ने पुनः नाट्यशास्त्र का अध्ययन करना शुरू किया, जिसकी लोकप्रियता वर्तमान समय में बढ़ रही है। जिसका प्रयोग हर भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली में कम या ज्यादा प्रमाण में किया

जाने लगा है। वर्तमान भरतनाट्यम् में नाट्यशास्त्र के विविध तत्वों को लेकर अनेकों शोध कार्य हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी का यह प्रयास है कि सदियों पुराने नाट्यशास्त्र के तत्व जो धीरे–धीरे विस्मृत हो चुके थे और समय के चलते जब उसे अब मान्यता मिल रही है एवं उसका अध्ययन किया जा रह है तब उसके प्रयोग से भरतनाट्यम् में और क्या सम्भावनाएँ बन सकती हैं। उस पर प्रकाश डाला जाए, जिसके लिए शोधार्थी ने नाट्यशास्त्र के करण को पुर्नजीर्वित करने का श्रेय डॉ0 पद्मा सुब्रह्मण्यम् जी को बताते हुए उनकी शिक्षा का बारीकीपूर्वक निरीक्षण किया है तथा करण की शिक्षा प्राप्त करने वाले तथा अपने नृत्य में इसका प्रयोग करने वाले कई नृत्य गुरु और युवा कलाकारों का साक्षात्कार किया है, जिसके कारण इस विषय से जुड़े पक्ष पर प्रकाश डाला जा सकता है।

वर्तमान समय में कई नृत्य गुरु व कलाकार अपनी शिक्षा व समझ के अनुसार करणों का प्रयोग अपने नृत्य प्रस्तुतियों में कर रहे हैं, जिससे उनके नृत्य प्रस्तुतियों में सौन्दर्य की वृद्धि हुई है, ऐसा उनका मानना है। इसके उपरान्त भरतनाट्यम् के वर्तमान स्वरूप में करण का प्रयोग किया जाए तो इसमें निकलकर आने वाली सम्भावनाओं पर भी शोधकर्ता ने प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

नाट्यशास्त्र में वर्णित करणों का प्रयोग नाट्य में किया जाता था, जिसका सीधा तात्पर्य कथावस्तु को असरकारक स्वरूप से प्रस्तुत करने में करणों का योगदान विशेषकर रहता था। समय के बदलाव के साथ जब नाट्य में से नृत्य ने पृथक स्वरूप प्राप्त किया तब वह दासीअट्टम् या भरतनाट्यम् एकल नृत्य के स्वरूप में जाना गया। उसी के अनुसार

भरतनाट्यम् नृत्य में नृत्त तथा अभिनय पक्ष में वृद्धि हुई, किन्तु समय के बदलाव के साथ नृत्त नाटिका स्वरूप का प्रचलन शुरू हुआ। तब से उपरूपक के स्वरूप नाटिका का भिन्न स्वरूप में उदय हुआ तथा नाटिका के मांग के अनुसार करणों का प्रयोग किया लाने लगा है और पिछले 50 वर्षों में भरतनाट्यम् के क्षेत्र में जो नाट्यशास्त्र के तत्वों खासकर करणों को लेकर एक नया स्वरूप उभरा है, जो अत्यन्त प्रभावशाली रहा है, जिसकी लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। इस अध्ययन के अन्त में यह कहना अतिश्योक्ति नहीं लगती कि अनेक गुरु तथा नृत्यकारों के मन्तव्यों के अनुसार यदि भरतनाट्यम् के वर्तमान समय में नाट्यशास्त्र के करणों का प्रयोग विवेक बुद्धि से किया जाए तो वह भरतनाट्यम् के स्वरूप को यथावत रखते हुए उसमें भिन्न–भिन्न प्रकार के अनेक सौन्दर्यात्मक तत्वों का वृद्धि किया जा सकता है।